पलक पाँवड़े

अयोध्या सिंह उपाध्याय ' हरिऔध '

कवि – परिचय

अयोध्या सिंह उपाध्याय ' हरिऔध ' का जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद में सन् 1865 ई . में हुआ था । प्रारंभिक शिक्षा चाचा बस्तसिंह के सान्निध्य में पायी । घर पर ही संस्कृत और फारसी का अध्ययन किया । उच्च शिक्षा के लिए क्वींस कॉलेज , वाराणसी में दाखिला लिया , किंतु अस्वस्थता के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सके । उन्होंने कानून की भी पढ़ाई कॉ और 1889 ई . में कानूनगो नियुक्त हुए लेकिन हरिऔधजी का मन पढ़ने – पढ़ाने में अधिक लगता था । इसलिए उन्होंने स्कूल में भी और विश्वविद्यालय में भी अध्यापन का कार्य किया । काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में अपना योगदान दिया । सन् 1947 ई . में हरिऔध जी चल बसे ।

हरिऔधजी ने अनेक विधाओं में रचनाएँ की । उनकी प्रमुख काव्यकृत्तियाँ हैं – ' प्रियप्रवास ' , ' चोखे चौपदे ' , ' वैदेही वनवास ' , ' चुभते चौपद ' आदि । उन्होंने ' प्रेमकांता ' , ' ठेठ हिंदी का ठाठ ' और ' अधखिला फूल ' नामक उपन्यास भी लिखे । ' प्रद्युम्न विजय ' और ' रुक्मिणीपरिणय ' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं । हरिऔधजी ने ' कबीर वचनावली ' का संपादन भी किया , जिसकी उपादेयता आज तक बनी हुई है ।

खड़ी बोली को काव्य – भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले कवियों में अयोध्या सिंह उपाध्याय का नाम महत्त्वपूर्ण है । उनीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक 1890 ई . के आस – पास अपने साहित्य सेवा के क्षेत्र में पर्दापण किया । आरम्भ में आप नाटक तथा उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित हुए । परन्तु इनकी प्रतिभा का विकास वस्तुतः कवि – रूप में हुआ । हरिऔध को कवि के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके प्रबन्धकाव्य ' प्रियप्रवास ' के कारण मिली । इसी काव्य कृति के कारण इन्हें खड़ीबोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय मिला ।

हरिऔध ने सर्वप्रथम पात्रों के वृत्त और चरित्र में परिवर्तन किए तो दूसरी ओर खड़ी बोली के संबंध में मौलिक प्रयोग किए । स्मरणीय है कि इस समय तक यह विवाद का विषय था कि कविता खड़ी बोली में लिखी जाए या कि ब्रजभाषा में । स्वयं हरिऔध दोनों आधार – बोलियों का प्रयोग कर रहे थे । रस – शास्त्र के संबंध में उन्होंने अपने ग्रंथ रस – कलश में उदाहरण.ब्रजभाषा में लिखे । पर नये युगबोध की अभिव्यक्ति के लिए खड़ीबोली को ही स्पष्ट रूप से स्वीकार किया । खड़ी बोलो को भली – भाँति प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपनी रचना में उसके कई रंग प्रस्तुत किए । संस्कृत वर्ण – वृत्तों में नितांत तत्सम पदावली ' प्रियप्रवास ' में प्रयुक्त की तो एकदम बोलचाल की खड़ीबोली अपने चौपदों में । एक सिरे पर भाषा का रूप था – ' रूपांधान प्रफुल्ल – प्राय कलिका राकेंदु – बिंबानना ' तो दूसरी ओर ' मैं घमंड में भरा ऐंठा हुआ एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा । '

कविता का भावार्थ

हरिऔध द्विवेदीयुग के कवि हैं । उनकी कविता
' पलक पाँवड़े ' में प्रकृति का व्यापक मनोहारी रूप प्रकट हुआ है । इस कविता में प्रकृति – सौन्दर्य – प्रेम तथा स्वतंत्रता के भाव सौश्लष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं । कवि को अपने प्रिय के आने की आस में उसे प्रकृति में होने वाली सभी -माएँ मनभावन लगती है । उसे आज की सुबह बहुत भावन लगती है । आसमान की लाली और ज का निकलना आश्चर्यचकित कर देता है । चिड़िया तो प्रतिदिन सुबह होते ही चहकते हैं परन्तु दिन उनकी चहचहाहट

https://www.evidyarthi.in/

सुनकर उमंग में घुल जाता है । उसे प्रकृति के जितने व्यापार हैं , घटनाएँ सभी अलग नजर आते हैं । कवि कहते हैं कि पेड़ क्यों है हरे – भरे इतने , किसलिए फूल हैं त फूले । इसका आशय है कि जरूर कोई व्यवस्था में भारी परिवर्तन हुआ है , जिसके कारण धारी प्रकृति खुशहाल लजर आ रही है । हवा भी संभल – संभल कर चल रही है । झोल , तालाब , नदियों में सूर्य का फैला प्रकाश सुनहली चादर के रूप में कवि को दिखाई पड़ते हैं । सभी और अशहाली दिखाई पड़ती है । कवि की आँखें उसे निहारते – निहारते थक गई हैं । इतने दिनों के बाद आ रहा है इसलिए कवि पलक पाँवड़े बिछाकर बैठा है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/